बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - V (a)
प्रकरण - शान्ति शिक्षा
व्याख्यान सं. - 01

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

भूमिका

आज संपूर्ण विश्व किसी न किसी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन सभी प्रकार की चुनौतियों का मूल कारण कहीं न कहीं "अशांति " है। सभी प्राणी भागम-भाग भरी ज़िन्दगी जी रहे हैं। विगत दो विश्व युद्धों के परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि इस प्रकार की हिंसा, आतंकवाद, द्वेष , अशांति लोगों के बीच कायम रहेगी तो कोई संदेह नहीं कि तीसरे विश्व युद्ध की विभीषिका समस्त प्राणी-जगत का संहार कर देगी। अतः आज सर्वत्र व्याप्त अशांति के इस वातावरण में मानव सहिष्णुता, सद्भाव एवं शांति की अत्यंत आवश्यकता है।

शान्ति शिक्षा का अर्थ

शान्ति शिक्षा का अर्थ शान्ति शिक्षा कोई विचार या प्रणाली नहीं है और न ही इसका संबंध किसी कानूनी व्यवस्था से है। शान्ति शिक्षा वास्तव में वह जीवन शैली है जो शोषण रहित, हिंसा रहित तथा न्यायप्रिय समाज की संरचना करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है एवं मनुष्य का मनुष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं विचारक जे. कृष्णमुर्ति के शब्दों में, "शान्ति का समारंभ तो अपने अवबोध से होता है , इसके लिए संगठनों , सत्ताधारियों या सरकारों पर निर्भर रहना और अधिक एवं व्यापक द्वन्द्व को उत्पन्न करना है। यदि हम वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन लाना चाहते हैं तो हमें पहले अपने में परिवर्तन करना होगा।"

भारतीय परिदृश्य

यदि भारतीय परिदृश्य की बात की जाय तो शांति शिक्षा का सम्प्रत्यय नया नहीं है। हमारी संस्कृति के प्रारम्भ से ही "**वसुधैव कुटुम्ब्कम**" की अवधारणा देखी जा सकती है। वेदों में भी शान्ति एवं जनकल्याण की भावना के विकास पर बल दिया गया है।

ऋगवेद में स्पष्ट रूप से लिखा है - "शं न: सूर्य उरुचक्षा उदेतु।
शं चतस्त्र: प्रदिशे भवन्तु ।। "

अर्थात् अत्यंत फैले हुए तेज से युक्त सूर्योदय हम सभी के लिए शान्तिदायक हों।

इसी प्रकार **ऋग्वेद** में उद्धृत **शान्ति: पाठ** इस प्रकार है -

"ॐ द्यौ: शान्ति:, अंतरिक्षँ शान्ति:, पृथ्वी: शान्ति:,
राप: शान्ति:, औषधय: शान्ति:, वनस्पतयः शान्ति:,
विष्वदेवा: शान्ति:, सर्वं शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति:
सा मा शान्तिरेधि:, ॐ शान्ति:,शान्ति:,शान्ति: ।।"

अर्थात् द्युलोक, अंतरिक्ष जगत , पृथ्वी सुख-शान्ति देने वाली हों। जल, औष्धियाँ तथा वनस्पतियाँ शान्ति दें। समस्त देव ब्रहम और सभी कुछ शान्तिप्रद हो। जो शान्ति विश्व में फैली हुई हैं वो मुझे प्राप्त हों। मैं बराबर शान्ति का अनुभव करूँ।

बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में महात्मा गाँधी के सत्याग्रही विचारों ने एक बार फिर से लोगों को शान्ति एवं अहिंसा की ओर उन्मुख करने के प्रयास किया। महान शीसखाविद् स्वामी विवेकानंद की शिक्षा को सार 'सर्वभूतिहरता' था, जिसका अर्थ है सभी प्राणियों के कल्यायण के के लिए कार्यरत रहना।

शान्ति शिक्षा के उद्देश्य

शान्ति शिक्षा के उद्देश्यों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है :

(1) छत्रों में शांतिप्रिय मनोवृत्ति का विकास करना।
(2) छात्रों में अंतर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व की भवना का विकास करना।
(3) छात्रों के द्वारा पर्तिस्पर्धा एवं सहयोग के बीच के अंतर को समझना।
(4) छात्रों में उचित-अनुचित एवं न्याय-अन्याय के अर्थ को समझाना।
(5) छात्रों में विश्वव्यापी ज्ञान एवं विवेकपूर्ण चिंतन हेतु जिज्ञासा जागृत करना।
(6) उनमें ऐसी मनोवृत्ति का विकास करना कि वे सबको प्यार करें।
(7) उनमें ऐसी दृष्टि विकसित करना जिससे वे हिंसा तथा संघर्ष की समस्त अभिव्यक्तियों को समझते हुए उनके दूरगामी परिणामों की विभीषिका से सचेत हो सकें।